नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तक एवं नवीनतम परिवर्तित पाठ्यक्रम पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®

पास बुक्स

संस्कृत-IX

(कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी पूर्णतः नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 260/-

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

  पता : प्रकाशन विभाग

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रम

संस्कृत–कक्षा 9

परीक्षा	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	पूर्णांक
सैद्धान्तिक	3.15 होरा:	100	100

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
1.	अपठितावबोधनम्	15
2.	रचनात्मकम् कार्यम्	25
3.	व्याकरणम्	25
4.	पठितावबोधनम् (शेमुषी प्रथमो भाग:)	35
	कुल	100

पुस्तक का नाम : शेमुषी प्रथमो भाग:

इकाई संख्या	विषयवस्तु	अंकभार
1. अपठितावबोधनम्		**10 + 5 = 15**
	(क) 80-100 शब्द परिमित: सरल अपठित गद्यांश:	
	(i) शीर्षक दानम्	**01**
	(ii) एकपदेन उत्तरम्	**½ × 4 = 02**
	(iii) पूर्णवाक्येन उत्तरम्	**1 × 3 = 03**
	(iv) अनुच्छेदाधारितं भाषिक कार्यम्	**1 × 4 = 04**
	(ख) 40-50 शब्द परिमित: सरल अपठित गद्यांश:	
	(i) एकपदेन उत्तरम्	**½ × 2 = 01**
	(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरम्	**1 × 2 = 02**
	(iii) अनुच्छेदाधारितं भाषिक कार्यम्	**1 × 2 = 02**
	भाषिक कार्यम् इत्येनम् अभिप्रेतम् अस्ति	
	(i) वाक्ये कर्तृ-क्रिया पदचयनम्	
	(ii) कर्तृ क्रिया अन्विति:	
	(iii) विशेषण विशेष्य: अन्विति: (iv) संज्ञास्थाने सर्वनामप्रयोग: अथवा सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोग:	
	(v) पर्यायं विलोमं वा पदं दत्त्वा अनुच्छेदे दत्तं पदचयनम्	

2. रचनात्मकं कार्यम्		**25**
	(i) संकेताधारित अभिनन्दनपत्रम्/वर्धापनपत्रम्/ निमन्त्रणपत्रम्/प्राचार्यं प्रति प्रार्थना-पत्रम्	**5**
	(ii) संकेताधारितः वार्तालापः अथवा अनुच्छेदलेखनम्	**5**
	(iii) संकेताधारितं चित्रवर्णनम्	**5**
	(iv) कथाक्रम संयोजनम् (क्रमरहितानाम् अष्टवाक्यानां क्रमपूर्वक संयोजनम्)	**04**
	(v) अनुवाद कार्यम्-हिन्दीभाषायाः अष्टवाक्येषु षड्वाक्यानां संस्कृते अनुवादः	**06**
3. व्याकरणम्	बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः, रिक्तस्थानपूर्तिः, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नाः, लघूत्तरात्मक प्रश्नाः च	**25**
	(i) वाक्येषु अनुच्छेदे वा सन्धिकार्यम् (सन्धि, सन्धि विच्छेदः) (क) स्वरसन्धिः दीर्घः, गुणः, वृद्धिः, यण् (ख) विसर्ग सन्धि—विसर्गस्य उत्त्वं, रुत्वं, लोपः, विसर्गस्थाने (श् ष् स्)	 **2** **2**
	(ii) समास ज्ञानम्—तत्पुरुषः, द्विगुः, बहुव्रीहिः, समासानाम् सामासिक पद निर्माणम्, समासविग्रहं च	**3**
	(iii) कारकम्—उपपदविभक्तीनाम् प्रयोगाः, अनुच्छेदे, वाक्येषु वा द्वितीयातः सप्तमी— विभक्तिपर्यन्तम् सामान्य परिचयः	**3**
	(iv) प्रत्ययाः—तुमुन्, क्त्वा, ल्यप्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, टाप्, तमप्, तरप्	**3**
	(v) धातु रूपाणिः—लट्, लोट्, लृट्, लङ्, विधिलिङ्लकारेषु परस्मैपदिनः-भू, पठ्, हस्, नम्। गम् (गच्छ्), अस्, हन्, क्रुध्, नश्, नृत्, इष्, पृच्छ्, कृ, ज्ञा, भक्ष्, चिन्त्, इत्यादयः। आत्मनेपदिनः—सेव्, लभ्, रुच्, मुद्, याच् (केवलं लट्लकारे) उभयपदिनः—नी, ह, (हर्) भज्, पच्।	**3**
	(vi) शब्दरूपाणि पुल्लिङ्गः अजन्ताः—अकारान्ताः (बालकवत्) इकारान्ताः (कविवत्) उकारान्ताः (साधुवत्)	**3**

	ऋकारान्ताः (पितृ, धातृवत्) हलन्ताः राजन्, भवत् आत्मन्, विद्वस्, गच्छत् स्त्रीलिङ्गः अजन्ताः— आकारान्ताः (रमावत्) इकारान्ताः (मतिवत्) ईकारान्ताः (नदीवत्) ऋकारान्ताः (मातृवत्) नपुंसकलिङ्गः अजन्ताः— अकारान्ताः (फलवत्) उकारान्ताः (मधुवत्)	
	(vii) संख्यावाचक शब्दाः एक, द्वि, त्रि, चतुर्, पञ्चन्	2
	(viii) सर्वनाम शब्दाः (क) यत्, तत्, किम्, इदम्, (त्रिषु लिङ्गेषु) (ख) अस्मद्, युष्मद्	2
	(ix) उपसर्गाः- सामान्यपरिचयः	2
4. पठितावबोधनम्—(शेमुषी प्रथमो भागः)		**35**
	(i) पाठ्यपुस्तकात् बहुचयनात्मक प्रश्नाः	1 × 7 = 7
	(ii) पाठ्यपुस्तकात् अंशद्वयम्—(एकः गद्यांशः, एकः पद्यांशः) (क) एकपदेन उत्तरम् ½ × 2 = 1 (ख) पूर्णवाक्येन् 1 × 2 = 2 (ग) भाषिककार्यम् 1 × 2 = 2	5 + 5 = 10
	(iii) पाठ्यपुस्तकात्—पद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् सप्रसङ्गम् भावार्थलेखनम्	3
	(iv) पाठ्यपुस्तकात् एकस्य गद्य पाठस्य हिन्दी भाषायां सार-लेखनम् (द्वयोः एकस्य)	4
	(v) प्रश्ननिर्माणम् (चत्वारः)	1 × 4 = 4
	(vi) एकस्य पद्यस्य अन्वयलेखनम्	2
	(vii) पाठ्यपुस्तकात् श्लोकद्वयलेखनम्	3
	(viii) शब्दार्थलेखनम् (चतुर्णाम्)	½ × 4 = 2

निर्धारित पुस्तक — शेमुषी प्रथमो भागः

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

शेमुषी (प्रथमो भागः)

	मङ्गलम्	1
1.	भारतीवसन्तगीतिः	2
2.	स्वर्णकाकः	11
3.	गोदोहनम्	24
4.	सूक्तिमौक्तिकम्	39
5.	भ्रान्तो बालः	51
6.	लौहतुला	62
7.	सिकतासेतुः	73
8.	जटायोः शौर्यम्	85
9.	पर्यावरणम्	98
10.	वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्	109
पाठ्यपुस्तकात् द्वौ श्लोकलेखनम्		119
अपठितावबोधनम्–		**120-144**
	(क) 80-100 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः	120-135
	(ख) 40-50 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः	135-144
रचनात्मकं कार्यम्–		
(i)	संकेताधारित अभिनन्दनपत्रम् / वर्धापनपत्रम् /निमन्त्रणपत्रम्/ प्राचार्यं प्रति प्रार्थना-पत्रम्	145-160
(ii)	(अ) संकेताधारिताः वार्तालापः	160-168
	(ब) अनुच्छेद-लेखनम्	168-173
(iii)	संकेताधारिताः चित्रवर्णनम्	173-182
(iv)	कथाक्रमसंयोजनम्	182-190
(v)	अनुवाद-कार्यम्	190-202
व्याकरणम्–		
	(i) सन्धिकार्यम्, (ii) समास-ज्ञानम्, (iii) कारकम्, (iv) प्रत्ययज्ञानम्, (v) धातुरूपाणि, (vi) शब्दरूपाणि, (vii) संख्यावाचक शब्दाः, (viii) सर्वनाम शब्दाः, (ix) उपसर्गाः	203-330

संस्कृत कक्षा–IX

शेमुषी (प्रथमो भागः)

मङ्गलम्

(1)

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥

अन्वय–यस्यां (भूमौ) समुद्रः, उत सिन्धुः आपः (सन्ति), यस्याम् अन्नं कृष्टयः सं बभूवुः, यस्याम् इदं जिन्वति प्राणदेजत्, सा भूमिः नः पूर्वपेये दधातु।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य–पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य–पदार्थ प्रदान करने की मंगल–कामना की गई है।

हिन्दी–अनुवाद–जिस (भूमि) में महासागर, नदियाँ और जलाशय (झील, सरोवर आदि) विद्यमान हैं, जिसमें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ उपजते हैं तथा कृषि, व्यापार आदि करने वाले लोग सामाजिक संगठन बना कर रहते हैं, जिस (भूमि) में ये साँस लेते (प्राणत्) प्राणी चलते–फिरते हैं; वह मातृभूमि हमें प्रथम भोज्य पदार्थ (खाद्य–पेय) प्रदान करे।

(2)

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु॥

अन्वय–यस्याः पृथिव्याः चतस्रः प्रदिशः, यस्याम् अन्नं कृष्टयः सं बभूवुः, या बहुधा प्राणदेजत् बिभर्ति, सा भूमिः नः गोषु अपि अन्ने दधातु।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य–पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य–पदार्थ प्रदान करने की मंगल–कामना की गई है।

हिन्दी–अनुवाद–जिस भूमि में चार दिशाएँ तथा उपदिशाएँ अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ (फल, शाक आदि) उपजाती हैं; जहाँ कृषि–कार्य करने वाले सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं, जो (भूमि) अनेक प्रकार के प्राणियों (साँस लेने वालों तथा चलने–फिरने वाले जीवों) को धारण करती है, वह मातृभूमि हमें गौ आदि लाभप्रद पशुओं तथा खाद्य–पदार्थों के विषय में सम्पन्न बना दे।

(3)

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥

अन्वय–बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं जनं यथा औकसं बिभ्रती ध्रुवा इव अनपस्फुरन्ती धेनुः इव पृथिवी मे द्रविणस्य सहस्रं धारादुहाम्।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य–पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य–पदार्थ प्रदान करने की मंगल–कामना की गई है।

हिन्दी–अनुवाद–अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले तथा अनेक धर्मों को मानने वाले जन–समुदाय को, एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान, धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने देने वाली स्थिर–जैसी यह पृथ्वी हमारे लिए धन की सहस्रों धाराओं का उसी प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती हो।

प्रथमः पाठः

भारतीवसन्तगीतिः

(सरस्वती का वसन्त-गान)

पाठ-परिचय–प्रस्तुत पाठ आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रख्यात कवि **पं. जानकी वल्लभ शास्त्री** की रचना '**काकली**' नामक गीत-संग्रह से संकलित है। इसमें सरस्वती की वन्दना करते हुए कामना की गई है कि हे सरस्वती! ऐसी वीणा बजाओ, जिससे मधुरमञ्जरियों से पीत पंक्तिवाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे-धीरे बहना, अमराइयों में काले भ्रमरों का गुञ्जार और नदियों का (लीला के साथ बहता हुआ) जल, वसन्त ऋतु में मोहक हो उठे। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखी गयी यह गीतिका एक नवीन चेतना का आवाहन करती है तथा ऐसे वीणास्वर की परिकल्पना करती है जो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जनसमुदाय को प्रेरित करे।

अन्वय, कठिन-शब्दार्थ, सप्रसंग हिन्दी-अनुवाद/भावार्थ एवं पठितावबोधनम्–

(1) **निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्**
मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम्।
मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम्॥ 1॥
निनादय...॥

अन्वय–अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय। ललित-नीति-लीनां गीतिं मृदुं गाय। इह वसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति। ललित-कोकिला-काकलीनां कलापाः (विलसन्ति)। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

कठिन-शब्दार्थ–अये वाणि! = हे सरस्वती!। **नवीनां** = नवीन (नूतनाम्)। **निनादय** = बजाओ/गुंजित करो (नितरां वादय)। **ललितनीतिलीनाम्** = सुन्दर नीतियों से युक्त (सुन्दरनीतिसंलग्नाम्)। **मृदुम्** = कोमल (मधुरं, चारुः)। **गाय** = गाओ (स्तु)। **इह** = यहाँ (अत्र)। **वसन्ते** = वसन्त-काल में। **मञ्जरी** = आम्रपुष्प (आम्रकुसुमम्)। **पिञ्जरीभूतमालाः** = पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ (पीतपङ्क्तयः)। **सरसाः** = मधुर (रसपूर्णाः)। **रसालाः** = आम के वृक्ष (आम्राः)। **लसन्ति** = सुशोभित हो रही हैं (शोभन्ते)। **ललित** = मनोहर (मनोहरः)। **कोकिलाकाकलीनां** = कोयलों की आवाज (कोकिलानां ध्वनिः)। **कलापाः** = समूह (समूहाः)।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत गीति (पद्यांश) हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' (प्रथमो भागः) के 'भारतीवसन्तगीतिः' नामक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के प्रसिद्ध गीत-संग्रह 'काकली' से संकलित किया गया है। इसमें वाणी की देवी सरस्वती की वन्दना करते हुए वसन्तकालीन मनमोहक तथा अद्‌भुत प्राकृतिक शोभा का वर्णन किया गया है।

हिन्दी-अनुवाद–हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ। सुन्दर नीतियों से युक्त गीत मधुरता से गाओ। इस वसन्त-काल में मधुर आम्र-पुष्पों से पीली बनी हुई सरस आम के वृक्षों की पंक्तियाँ सुशोभित हो रही हैं और उन पर बैठी हुई एवं मधुर ध्वनियाँ करती हुई कोयलों के समूह भी सुशोभित हो रहे हैं। हे सरस्वती! आप नवीन वीणा बजाइए एवं मधुर गीत गाइए।

भावार्थ–भारत देश में वसन्त-ऋतु का अत्यधिक महत्त्व है। इस समय प्राकृतिक शोभा सभी के मन को सहज ही आकर्षित करती है। आम के वृक्षों पर मञ्जरियाँ सुशोभित होती हैं तथा उन पर बैठी हुई कोयल मधुर कूजन से सभी के मन को मोह लेती है। कवि ने यहाँ इसी प्राकृतिक सुषमा का सुन्दर वर्णन करते हुए वाग्देवी सरस्वती से नवीन वीणा बजाकर मधुर गीत सुनाने के लिए प्रार्थना की है।

पठित-अवबोधनम्–

निर्देशः–उपर्युक्तं पद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत–

प्रश्नाः– **I. एकपदेन उत्तरत–**

(i) वाणी कीदृशीं वीणां निनादयतु? (ii) रसालाः कीदृशाः लसन्ति?